हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल (उत्तराखंड)

पत्रांक : हिन्दी/पाठ्यसमिति/ज़ूम 6681715882/2020 दिनांक : 14 अगस्त 2020

हिन्दी पाठ्यसमिति (Board of Studies) का कार्यवृत्त

माननीय कुलपति,कुमाऊँ विश्वविद्यालय के निर्देश पर हिन्दी विषय की पाठ्यसमिति की आवश्यक ऑनलाइन बैठक संयोजक हिन्दी प्रो. चन्द्रकला रावत की अध्यक्षता में आज दिनांक 14 अगस्त 2020 को ज़ूम स्ट्रीम लिंक https://us04web.zoom.us/j/6681715882?pwd=RmdQaWR1UU0xY0IoQXp1ODFmMm5Ndz09 मीटिंग आई डी 6681715882 के माध्यम से सम्पन्न हुई। बैठक में सदस्यों की ऑनलाइन उपस्थिति निम्नवत् रही –

1. प्रो. चन्द्रकला रावत (संयोजक, डी.एस.बी.परिसर, कु.वि.वि.नैनीताल)
2. प्रो. अनिल कुमार राय (बाह्य विशेषज्ञ, दिल्ली वि.वि.)
3. प्रो. पवन अग्रवाल (बाह्य विशेषज्ञ, लखनऊ वि.वि.)
4. प्रो. निर्मला ढैला बोरा (सदस्य, डी.एस.बी.परिसर, कु.वि.वि.नैनीताल)
5. प्रो. पदम सिंह बिष्ट (संकायाध्यक्ष कला)
6. प्रो. जगत सिंह बिष्ट (सदस्य, एस.एस.जे..परिसर, कु.वि.वि.अल्मोड़ा)
7. प्रो. शिरीष कुमार मौर्य (सदस्य, डी.एस.बी.परिसर, कु.वि.वि.नैनीताल)
8. डॉ. नीलाक्षी जोशी (सदस्य, राज.स्ना.महावि. पिथौरागढ़))

बैठक में निम्नवत् निर्णय सर्वसम्मति से लिए गए –

1. बैठक में सर्वप्रथम दिनांक 18 अक्टूबर 2019 को सम्पन्न हुई पाठ्यसमिति की विगत बैठक के प्रस्तावों तथा निर्णयों की पुष्टि की गई।
2. बैठक में सर्वसम्मत निर्णय लिया गया कि माननीय कुलपति जी के निर्देशों के क्रम में परास्नातक (एम ए) हिन्दी में सीबीसीएस पद्धति को अंगीकार किया जाए।
3. बैठक में परास्नातक(एम.ए.) हिन्दी के नवीन सीबीसीएस पाठ्यक्रम की सर्वसम्मत संस्तुति की गई, जिसकी मूल प्रति संलग्न है।

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

4. बैठक में बी.ए. द्वितीय सत्र तृतीय प्रश्नपत्र के अन्तर्गत निम्नांकित दो पाठ्यपुस्तकों की सर्वसम्मत संस्तुति की गई 1. रीतिकालीन काव्य – सम्पादक प्रो. मानवेन्द्र पाठक तथा 2. काव्य प्रदीप – रामबहोरी शुक्ल (लोकभारती, इलाहाबाद)इलाहाबाद)।
5. बैठक में कुलसचिव, कु.वि.वि. नैनीताल के पत्र संख्या मान्यता/2019/1663 दिनांकित 30.06.2020 का संज्ञान लेते हुएसर्वसम्मत निर्णय लिया गया कि काव्यांग परिचय शीर्षक वाली प्रो. मानवेन्द्र पाठक के नाम की कथित पाठ्यपुस्तक को सहायक पुस्तकों की सूची से हटाने तथा इस आशय की सूचना सभी सम्बद्ध परिसरों/महाविद्यालयों को प्रेषित करने की अविलम्ब कार्यवाही संयोजक हिन्दी द्वारा की जाए।

बैठक के अंत में प्रो. चन्द्रकला रावत, संयोजक – हिन्दी द्वारा सभी उपस्थित सदस्यों का आभार ज्ञापित किया गया।

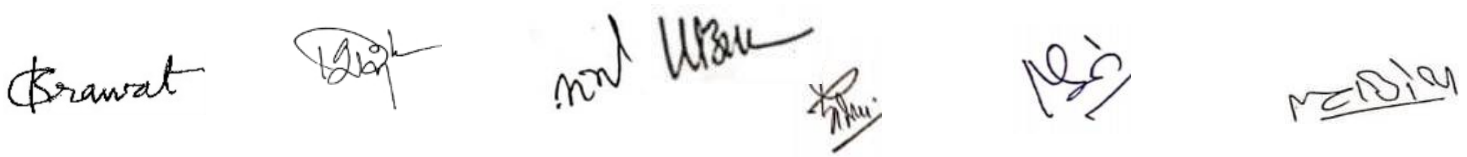

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

पत्रांक :

दिनांक : 14 अगस्त 2020

सीबीसीएस पाठ्यक्रम – एम.ए. हिन्दी

M.A. HINDI CBCS SYLLABUS

Programme Specific Outcomes

PSO 1. हिन्दी भाषा और साहित्य में दक्षता।

PSO 2. सामाजिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक आदि राष्ट्रीय संदर्भों में हिन्दी साहित्य की महान परम्परा का रचनात्मक और सैद्धान्तिक ज्ञान प्रदान करना।

PSO 3. महान एवं उदात्त साहित्यिक कृतियों के साक्ष्य से उन्नत जीवन तथा नैतिक मूल्यों के पालन हेतु प्रेरित करना।

PSO 4. साहित्य के साक्ष्य से राष्ट्र की सामाजिक संरचना की समझ विकसित करना।

PSO 5. साहित्य के साक्ष्य से व्यक्ति एवं समाज में सद्भाव, समरसता, समानता, सहिष्णुता आदि मानवीय गुणों का विकास करना।

PSO 6. साहित्य के माध्यम से जनसाधारण अथवा जनता के जीवन की समस्याओं और संघर्षों का साक्षात्कार करना।

PSO 7. साहित्य के अध्ययन द्वारा प्रकृति एवं पर्यावरण से मनुष्यों के सम्बन्धों के साक्ष्य व पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा प्राप्त करना।

PSO 8. साहित्यिक कृतियों के अध्ययन से राष्ट्र के स्वरूप के विषय में उदार व उदात्त चिंतन के लिए प्रेरित करना।

PSO 9. साहित्य के साक्ष्य से राष्ट्रप्रेम की भावना का उत्तरोत्तर विकास करना।

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

हिन्दी में परास्नातक उपाधि के इस पाठ्यक्रम में कुल 25 प्रश्नपत्र हैं –

1. 15 प्रश्नपत्र कोर कोर्स अथवा अनिवार्य पाठ्यक्रम के अन्तर्गत हैं, जिनमें से प्रत्येक का चयन हिन्दी के विद्यार्थी द्वारा अनिवार्य रूप से किया जाएगा। प्रथम तथा द्वितीय सत्रार्द्ध में पाँच-पाँच अनिवार्य प्रश्नपत्र, तृतीय सत्रार्द्ध में तीन तथा चतुर्थ सत्रार्द्ध में दो अनिवार्य प्रश्नपत्र सम्मिलित किए गए हैं।
2. 6 प्रश्नपत्र इलेक्टिव कोर्स अथवा ऐच्छिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत हैं। तृतीय तथा चतुर्थ सत्रार्द्ध में हिन्दी के विद्यार्थी द्वारा तीन-तीन में से दो-दो प्रश्नपत्रों का चयन किया जाना है।
3. 4 प्रश्नपत्र ओपेन इलेक्टिव कोर्स अथवा मुक्त ऐच्छिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत हैं, इस पाठ्यक्रम के प्रश्नपत्रों का चयन हिन्दी के अतिरिक्त अन्य विषयों/अनुशासनों के विद्यार्थी भी कर सकते हैं। तृतीय तथा चतुर्थ सत्रार्द्ध में दो-दो में से एक-एक प्रश्नपत्र का चयन करना है।

अध्ययन की सुविधा के लिए पाठ्यक्रम की आंतरिक संरचना का विवरण सारणी के माध्यम से भी दिया जा रहा है -

SEMESTER	CORE COURSES (15 out of 15)	ELECTIVE COURSES (4 out of 6)	OPEN ELECTIVE COURSES (2 0ut of 4)
I Total Credits 20	5x4=20 credits 1.आदिकालीन एवं निर्गुण भक्तिकाव्य 2.सगुण भक्तिकाव्य एवं रीतिकालीन काव्य 3.आधुनिक हिन्दी काव्य(छायावाद तक) 4.हिन्दी साहित्य का इतिहास(आदिकाल से रीतिकाल तक) 5.हिन्दी साहित्य का इतिहास(आधुनिककाल)		

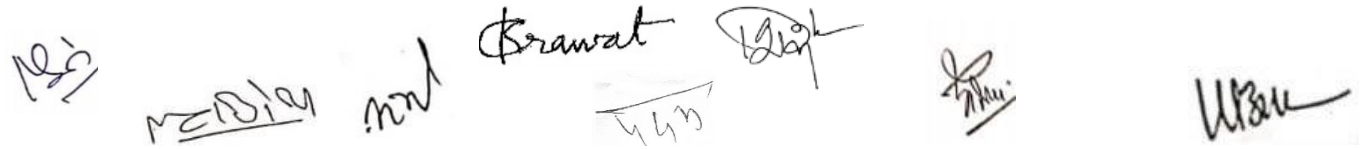

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

II Total Credits 20	5x4=20 credits 6.भारतीय काव्यशास्त्र 7.पाश्चात्य काव्यशास्त्र 8.आधुनिक हिन्दी काव्य : छायावादोत्तर 9.हिन्दी कथा एवं नाटक साहित्य 10.निबन्ध एवं स्मारक साहित्य		
III Total Credits 22	3x4=12 credits 11. भाषा विज्ञान 12. उत्तराखंड के हिन्दी कवि 13. उत्तराखंड के हिन्दी कथाकार	**इनमें से कोई दो/ 2**x4= 8 credits 1. कुमाउनी साहित्य 2. विशिष्ट अध्ययन : प्रेमचंद 3. विशिष्ट अध्ययन : सूरदास	**इनमें से कोई एक/ 1**x2= 2 credits 1.अनुवाद : सिद्धान्त और स्वरूप 2.हिन्दी भाषा
IV Total Credits 18	**2**x4= 8 credits 14.लोक साहित्य 15.मौखिकी	**इनमें से कोई दो/2**x4= 8 credits 4. विशिष्ट अध्ययन : कबीरदास 5.भारतीय साहित्य 6.लघुशोध प्रबंध	**इनमें से कोई एक/1**x2= 2 credits 3.हिन्दी पत्रकारिता 4.कुमाउनी भाषा
Total 80 Credits	15 CCHi Papers	4 ECHi out of 6	2 OECHi out of 4

CCHi – Core Course Hindi. ECHi – Elective Course Hindi, OEHi – Open Elective Course Hindi

4 Credit = 100 Marks (70 : External, 30 : Internal)

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

एम.ए.हिन्दी (सम्पूर्ण सीबीसीएस पाठ्यक्रम)

Programme Outcomes

PO 1. साहित्य ऐसा स्रोत है, जो समाज व उसकी दशा, गति, दिशा, उसके उद्वेलन आदि को सजीवता से चित्रित करता है। शिक्षार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य का अध्ययन करते हुए अपनी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक गत्यात्मकता की मूल्यपरक पहचान प्राप्त करता है।

PO 2. हिन्दी साहित्य भारत के इतिहासक्रम में तत्कालीन सामाजिक, समावेशीकरण/समांगीकरण राज व्यवस्था, धर्म, भक्ति के विभिन्न पंथ, सूफी, संत, नाथ, सिद्ध, निर्गुण-सगुण, रीति, राज्याश्रयी श्रृंगाराभिव्यक्ति आदि से लेकर आधुनिक काल की विभिन्न विचारधाराओं / आंदोलनों और अद्यतन उत्तरआधुनिक वैचारिक परिदृश्य तक एक सुदीर्घ-सुलिखित दस्तावेज़ की तरह है। शिक्षार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य के अध्ययन से साहित्य के साथ-साथ इस लम्बी परम्परा का भी ज्ञान प्राप्त करता है।

PO 3. शिक्षार्थी साहित्य के पारंपरिक सांस्कृतिक आग्रहों के प्रति, नैतिक मूल्यों के प्रति सचेत होने के साथ-साथ इस महान भारतीय परम्परा के अग्रगामी आधुनिक स्वरूप का भी ज्ञान प्राप्त करता है।

PO 4. भौतिकवादी जगत में निरन्तर बदलते जीवन मूल्यों से उपजी आस्था-अनास्था, आशा-निराशा, संगति-विसंगति आदि में जीते मानव समाज को सही दिशा निर्देश साहित्य ही करता है। शिक्षार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य का अध्ययन कर सही व सच्चे अर्थ में समुन्नत जीवनमूल्यों का धारक मनुष्य बनता है।

PO 5. शिक्षार्थी संघ लोक सेवा आयोग तथा राज्य लोक सेवा आयोगों की प्रतियोगी परीक्षाओं में चयन हेतु विशिष्ट विषय के रूप में हिन्दी साहित्य का समग्र ज्ञान प्राप्त करता है।

PO 6. शिक्षार्थी हिन्दी अनुवाद तथा हिन्दी पत्रकारिता जैसे रोजगार क्षेत्रों में कार्य करने हेतु आधारभूत ज्ञान प्राप्त करता है।

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

PO 7. शिक्षार्थी उच्चस्तरीय शोध एवं उच्चशिक्षा में अध्यापन हेतु आधारभूत ज्ञान तथा योग्यता प्राप्त करता है।

I Semester

शिक्षार्थी को प्रथम सत्रार्द्ध में पाँच अनिवार्य पाठ्यक्रम/प्रश्नपत्र (Core Course) का अध्ययन करना है।

अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course) : प्रथम प्रश्नपत्र CCHi I - आदिकालीन एवं निर्गुण काव्य (प्रथम सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. शिक्षार्थी आदिकाल के कवि अब्दुल रहमान की कृति संदेस रासक के अध्ययन से हिन्दी भाषा के आदिकालीन तथा अपभ्रंश के परवर्ती रूप अवहट्ट का परिचय तथा ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी आदिकाल के प्रसिद्ध महाकाव्य पृथ्वीराज रासो के अध्ययन से वीरकाव्य की परम्परा तथा आदिकालीन हिन्दी के राजस्थानी प्रभाव वाले अवहट्ट रूप का परिचय तथा ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3. संस्कृत में जयदेव का गीतकाव्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हिन्दी में यह महत्व विद्यापति को प्राप्त है। शिक्षार्थी विद्यापति के पदों के अध्ययन से गीतकाव्य की समृद्ध भारतीय परम्परा तथा मैथिली भाषा का परिचय तथा ज्ञान प्राप्त करेगा।

CO4. शिक्षार्थी कबीर की वाणी का अध्ययन करते हुए हिन्दी भक्तिकाव्य में निर्गुण के स्वरूप तथा हिन्दी की संतकाव्य परम्परा का निकट परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी मलिक मोहम्मद जायसी के महाकाव्य पद्मावत का अध्ययन करते हुए हिन्दी भक्तिकाव्य में प्रेमाश्रयी सूफी काव्यधारा का ऐतिहासक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी में सामाजिक चेतना, राष्ट्रप्रेम तथा उच्च नैतिक मूल्यों का विकास होता है।

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

निर्धारित पाठ्यक्रम

1. अब्दुल रहमान: संदेश रासक, संपा0 डा. विश्वनाथ त्रिपाठी (व्याख्या हेतु, प्रथम प्रक्रम)
2. चंदवरदाई: कयमास-वध, संपा0 माताप्रसाद गुप्त,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. विद्यापति: संपा0 शिवप्रसाद सिंह (व्याख्या हेतु केवल रूप वर्णन), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. कबीरदास: कबीर वाणी पीयूष, संपा0 जयदेव सिंह/वासुदेव सिंह (व्याख्या हेतु प्रारंभ की 40 साखियाँ एवं प्रारम्भ के 5 पद), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. मलिक मुहम्मद जायसी: पद्मावत - संपा0 वासुदेवशरण अग्रवाल,लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद(व्याख्या हेतु केवल 'नागमती वियोग' वर्णन खंड)।

सहायक ग्रंथ – 1. संदेश रासक : हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2. पृथ्वीराज रासो – भाषा और साहित्य : नामवर सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, 3. कबीर : हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 4. कबीर – एक नई दृष्टि : रघुवंश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 5. भक्ति आंदोलन और काव्य : गोपेश्वर सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 5. आदिकालीन हिन्दी साहित्य – अध्ययन की दिशाएँ : सम्पादक -प्रो. अनिल राय, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली

अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course) : द्वितीय प्रश्नपत्र CCHi II - सगुण काव्य एवं रीतिकालीन काव्य(प्रथम सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. शिक्षार्थी मध्यकालीन सगुण भक्तिधारा व उसकी शाखाओं से रीतिकालीन काव्य तक की विभिन्न धाराओं का ऐतिहासिक परिचय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

CO2. शिक्षार्थी सूरदास की रचनाओं का अध्ययन कर सगुण धारा की कृष्णभक्ति शाखा का आलोचनात्मक व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है तथा सूरदास के काव्य में उपस्थिति प्रकृति और जीवन के लोक स्वरूप का साक्षात्कार कर पर्यावरण की सुन्दरता व उसके संरक्षण की अनिवार्यता के महत्व को समझता है।

CO3. शिक्षार्थी तुलसीदास के काव्य का अध्ययन कर सगुण धारा की रामभक्ति शाखा का आलोचनात्मक व सैद्धान्तिक ज्ञान तथा विभिन्न धार्मिक-सामाजिक मान्यताओं व मतों के बीच समन्वय की दृष्टि प्राप्त करता है। यह समन्वयवादी दृष्टि शिक्षार्थी के निजी जीवन में विभिन्न क्षेत्रों में सफलता हेतु सहायक होती है।

CO4. शिक्षार्थी केशवदास के काव्य के अध्ययन से भारतीय काव्यशास्त्र का परम्परागत ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी बिहारी के काव्य के अध्ययन से कविता की भाषा में मितकथन व अलंकारों के सटीक प्रयोग का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है, जिससे उसमें काव्यात्मक अभिरुचि का विकास एवं विस्तार होता।

CO6. शिक्षार्थी घनानंद की कविता के अध्ययन से सामाजिक रूढ़ियों के बीच प्रेम की विलक्षण अनुभूति से परिचित होता है, जिससे वह तत्कालीन से लेकर समकालीन समाज तक की सम्बन्ध आधारित जटिल संरचना के ज्ञान के साथ ही विवेचन की मनोवैज्ञानिक समझ भी प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम

1. सूरदास: भ्रमरगीत सार: संपा0 आचार्य रामचंद्र शुक्ल (व्याख्या के लिए पद संख्या 50 से 75 तक), नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
2. तुलसीदास: विनयपत्रिका: तुलसीदास (व्याख्या के लिए पद संख्या 51 से 75 तक), गीताप्रेस गोरखपुर।
3. केशवदास: संक्षिप्त रामचन्द्रिका: संपा0 डा. जगन्नाथ तिवारी। (व्याख्या हेतु प्रारंभिक दो प्रकाश- 1. मंगलाचरण, 2. अयोध्यापुरी वर्णन) रंजन प्रकाशन, सिटी स्टेशन मार्ग आगरा।
4. बिहारी: बिहारी रत्नाकर: संपा0 जगन्नाथदास रत्नाकर(व्याख्या हेतु प्रारंभिक 25 दोहे), प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।
5. घनानंद: घनानंद कवित्त: संपा0 आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (व्याख्या हेतु आरंभ के 15 छंद)

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

सहायक ग्रंथ – 1. भक्ति आंदोलन और भक्तिकाव्य : शिवकुमार मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 2. सूरदास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 3. केशवदास : विजयपाल सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 4. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य- मैनेजर पांडेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 5. भक्ति का संदर्भ : देवीशंकर अवस्थी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 6. गोस्वामी तुलसीदास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course) : तृतीय प्रश्नपत्र CCHi III- आधुनिक हिंदी काव्य :छायावाद तक (प्रथम सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1.शिक्षार्थी राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन एवं आधुनिक कविता के आरम्भ का रचनात्मक परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2.शिक्षार्थी हिन्दी नवजागरण में खड़ी बोली हिन्दी में काव्यरचना के सशक्त आरम्भ के साक्ष्य प्राप्त करता है। मैथिलीशरण गुप्त कृत साकेत की विषयवस्तु उसे हिन्दी कविता में स्त्री के मूक संघर्षों व बलिदानों के चित्रण का महत्वपूर्ण अभिलेख बनाती है, शिक्षार्थी इस पुस्तक के अध्ययन से हिन्दी में स्त्री विमर्श के आरंभिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3.शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कवियों जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत एवं महादेवी वर्मा और उनकी कविताओं के अध्ययन से छायावाद युग का ऐतिहासिक व सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी छायावादी कविता के अध्ययन से प्रकृति, प्रेम, सौन्दर्य, भारत की गहन भारतीय परम्परा तथा विचार की नवीन आधुनिक सरणियों /पद्धतियों का रचनात्मक एवं सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. मैथिलीशरण गुप्त: साकेत (व्याख्या के लिए केवल नवम सर्ग), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. जयशंकर प्रसाद: कामायनी (व्याख्या के लिए केवल श्रद्धा और इड़ा सर्ग), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

3. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला: राग-विराग, संपा0 रामविलास शर्मा (व्याख्या के लिए **राम की शक्तिपूजा)**, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

4. सुमित्रानंदन पंतः रश्मिबंध (व्याख्या के लिए प्रारंभिक 15 कविताएँ), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

5. महादेवी वर्मा: संधिनी (व्याख्या के लिए कविता संख्या 25 से 40 तक), लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद।

सहायक ग्रंथ – 1. मैथिलीशरण : नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2. जयशंकर प्रसाद : नंददुलारे वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 3. छायावाद – प्रसाद, निराला, महादेवी और पंत : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 4. निराला : आत्महंता आस्था – दूधनाथ सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 5. महादेवी : दूधनाथ सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 6. कवि सुमित्रानंदन पंत : नंदकिशोर नवल, नंददुलारे वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 7. कामायनी एक पुनर्विचार : गजानन माधव मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course) : चतुर्थ प्रश्नपत्र CCHi IV - हिंदी साहित्य का इतिहास: आदिकाल से रीतिकाल तक(प्रथम सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा,प्रविधि, काल-विभाजन पद्धति, नामकरण की समस्या व औचित्य के कारणों का ऐतिहासिक व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2.शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों तथा आदिकालीन हिन्दी साहित्य के अध्ययन से जैन साहित्य, बौद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, वीरकाव्य-रासो साहित्य आदि का सैद्धान्तिक ज्ञान और चंद बरदाई, अब्दुल रहमान, जगनिक, स्वयंभू, धनपाल, नरपति नाल्ह, विद्यापति आदि महत्वपूर्ण कवियों के कृतित्व का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

CO3.शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के पूर्व मध्यकाल/भक्तिकाल के प्रमुख कवियों का ऐतिहासिक परिचय तथा प्रमुख काव्यधाराओं एवं प्रवृत्तियों का सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के उत्तर मध्यकाल /रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का परिचय एवं प्रमुख प्रवृत्तियों का सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5.शिक्षार्थी रीतिकालीन कवि-आचार्यों द्वारा रचित लक्षण ग्रंथों की परम्परा का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।

CO6.शिक्षार्थी रीतिकाल की काव्यधाराओं यथा रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध तथा रीतिमुक्त तथा उनके प्रतिनिधि कवियों का ऐतिहासिक परिचय एवं उनकी कविता के चमत्कारपूर्ण शिल्पगत वैशिष्ट्य का ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा, काल विभाजन और नामकरण, हिंदी साहित्य का आदिकाल: नामकरण और प्रमुख प्रवृत्तियाँ, नाथ-सिद्ध साहित्य पंरपरा, रासो काव्य परंपरा, आदिकाल के प्रतिनिधि कवि और उनकी रचनाएँ।
2. मध्यकाल: भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और प्रमुख प्रवृत्तियाँ, निर्गुण संत काव्य और उसकी प्रमुख प्रवृत्तियाँ, सूफी काव्य परंपरा।
3. भक्तिकाल की सगुण काव्यधारा: रामभक्ति परंपरा, कृष्णभक्ति परंपरा, भक्तिकाल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ।
4. रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और प्रमुख प्रवृत्तियाँ, लक्षण ग्रंथ-परंपरा, रीतिकाल की काव्यधाराएँ: रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त काव्य, प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ।

सहायक ग्रंथ - 1. हिन्दी साहित्य की भूमिका : हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2. हिन्दी साहित्य का आदिकाल : हजारी प्रसाद द्विवेदी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 3. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 4. रीतिकाव्य – नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन 5. भक्ति और भक्ति आंदोलन : सेवा सिंह, आधार प्रकाशन,

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

पंचकूला(हरियाणा) 6. हिन्दी साहित्य का इतिहास : सम्पादक डॉ. नगेन्द्र 7. भक्ति आंदोलन के सामाजिक आधार : गोपेश्वर सिंह, \ किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली 8. निर्गुण काव्य में नारी : प्रो. अनिल राय, सार्थक प्रकाशन, दिल्ली

अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course) : पंचम प्रश्नपत्र CCHi V - हिंदी साहित्य का इतिहास : आधुनिक काल (प्रथम सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. शिक्षार्थी 1857 की क्रांति तथा हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2.शिक्षार्थी आधुनिक काल के राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिदृश्य का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3.शिक्षार्थी आधुनिक काल में अस्तित्व में आए साहित्यिक आंदोलनों अथवा विशिष्ट धाराओं यथा छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि का सैद्धान्तिक ज्ञान तथा नवीन रचना-दृष्टि के आलोक में उनके प्रमुख रचनाकारों का परिचय प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी हिन्दी में गद्य लेखन के उद्भव-विकास तथा गद्य की प्रमुख विधाओं यथा नाटक, कहानी, उपन्यास और निबंध का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5.शिक्षार्थी कथेतर गद्य के अन्तर्गत स्मारक साहित्य और उसकी विधाओं यथा संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्तांत, फीचर, डायरी, रिपोर्ताज आदि का परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. आधुनिक काल की पृष्ठभूमि: भारतेन्दु युग: प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ, द्विवेदी युग: प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ।
2. छायावाद: प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ, छायावादोत्तर युग: प्रगतिवाद, प्रयोगवाद: प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ, समकालीन हिंदी साहित्य: पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि।

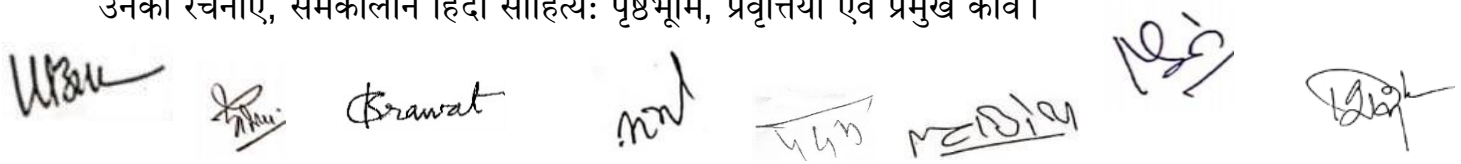

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

3. हिंदी गद्य साहित्य का विकास: नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी एवं निबंध।
4. हिंदी का स्मारक साहित्य: संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्तांत, फीचर, डायरी, रिपोर्ताज आदि।

सहायक ग्रंथ – 1. भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2. हिन्दी नवजागरण और महावीर प्रसाद द्विवेदी : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 3. हिन्दी उपन्यास का विकास : मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 4. हिन्दी कहानी का विकास : मधुरेश, , लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 5. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 6. हिन्दी नाटक – उद्भव और विकास, दशरथ ओझा, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली 7. स्मारक साहित्य और उसकी विधाएँ : निर्मला ढैला एवं रेखा ढैला, ग्रंथायन, अलीगढ़ 8. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास : बच्चन सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

II Semester

शिक्षार्थी को द्वितीय सत्रार्द्ध में पाँच अनिवार्य पाठ्यक्रम/प्रश्नपत्र (Core Course) का अध्ययन करना है।

अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course) : षष्ठ प्रश्नपत्र CCHi VI - भारतीय काव्यशास्त्र (द्वितीय सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. शिक्षार्थी भारतीय काव्यशास्त्र की अत्यन्त समृद्ध परम्परा का ऐतिहासिक व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2.शिक्षार्थी काव्य लक्षणों, काव्य हेतु तथा काव्य प्रयोजनों के अध्ययन से कविता के शिल्प और विषयवस्तु से लेकर उसके वृहद् सामाजिक उद्देश्यों तक आलोचना का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

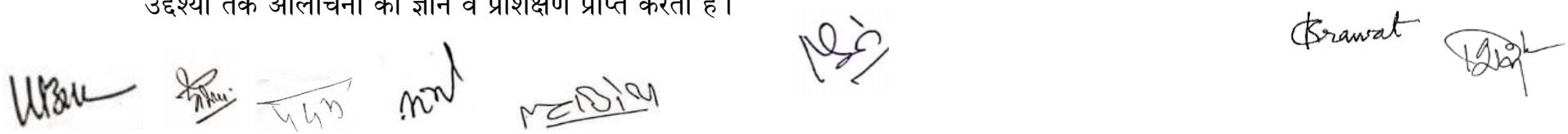

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

CO3.विभिन्न काव्य तत्वों के संधान के आधार पर परम्परा में आचार्यों ने काव्य विवेचन किया, फलस्वरूप रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति एवं औचित्य सम्प्रदाय अस्तित्व में आए, जो पश्चिमी काव्य चिंतन में इस विस्तार के साथ नहीं मिलते। शिक्षार्थी इन काव्य सम्प्रदायों के अध्ययन से भारतीय परम्परा में काव्य चिंतन की विलक्षणता, उदात्तता और सैद्धान्तिक विस्तार का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी हिन्दी आलोचना के उद्भव व विकास का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5.शिक्षार्थी हिन्दी के सामान्य आलोचना सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6.शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित आलोचकों के कृतित्व के अध्ययन से हिन्दी आलोचना की विशिष्ट विचारधाराओं का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO7.शिक्षार्थी साहित्यिक कृतियों के आलोचन का व्यावहारिक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. काव्यशास्त्र: परिभाषा, काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन एवं काव्य भेद।
2. काव्य संप्रदाय: रस संप्रदाय: रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति, साधारणीकरण, अलंकार संप्रदाय, रीति संप्रदाय, ध्वनि संप्रदाय, वक्रोक्ति संप्रदाय एवं औचित्य संप्रदाय।
3. हिंदी आलोचना: विकास, प्रमुख हिंदी आलोचक और उनके आलोचना सिद्धांत (आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डा. रामविलास शर्मा, डा. नामवर सिंह)।

सहायक ग्रंथ – 1. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र : गणपतिचंद्र गुप्त, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2. भारतीय काव्य विमर्श : राममूर्ति त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 3. भारतीय काव्यशास्त्र : तारकनाथ बाली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 4. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका : योगेन्द्रप्रताप सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 5. हिन्दी आलोचना : विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 6. हिन्दी आलोचना – शिखरों का साक्षात्कार : रामचंद्र तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course) : सप्तम प्रश्नपत्र CCHi VII - पाश्चात्य काव्यशास्त्र(द्वितीय सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. शिक्षार्थी साहित्यालोचन की पश्चिमी परम्परा का विस्तृत ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी प्राचीन यूनानी विचारक प्लेटो, अरस्तू तथा लोंजाइनस की काव्य मूल्यांकन सम्बन्धी मान्यताओं और स्थापनाओं यथा काव्य-सत्य, अनुकरण व विरेचन, त्रासदी विवेचन, उदात्त की अवधारणा आदि का ऐतिहासिक तथा सैद्धान्तिक परिचय प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी अंग्रेज़ी के महत्वपूर्ण साहित्यालोचक मैथ्यू आर्नल्ड, क्रोचे, आई ए रिचर्ड्स और डी एस इलियट के समालोचन सिद्धान्तों का ऐतिहासिक परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग्रेज़ी कवि वर्ड्सवर्थ के काव्यभाषा सिद्धान्त और कॉलरिज के कल्पना सिद्धान्त के अध्ययन से पश्चिम के प्रसिद्ध साहित्यान्दोलन स्वच्छंदतावाद का ऐतिहासिक परिचय और सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी पश्चिमी साहित्य और संस्कृति की महत्वपूर्ण विचारधाओं यथा मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, संरचनावाद और उत्तरआधुनिकता का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित विचारकों व उनके सिद्धान्तों के अध्ययन से आलोचना का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र: संक्षिप्त परिचय, प्लेटो के काव्य सिद्धांत, अरस्तू: अनुकरण सिद्धांत, विरेचन सिद्धात एवं त्रासदी विवेचन, लोंजाइनस: उदात्त की अवधारणा।
2. मैथ्यू आर्नल्ड: कला और नैतिकता का सिद्धांत, क्रोचे: अभिव्यंजनावाद, आई0 ए0 रिचर्ड्स: काव्यमूल्य, टी0 एस0 इलियट: कला की निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत।
3. वर्ड्सवर्थ: काव्यभाषा सिद्धांत, कालरिज: कल्पना सिद्धांत।

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

4. विविध वाद: मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, संरचनावाद, उत्तर आधुनिकतावाद।

सहायक ग्रंथ – 1. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र : गणपतिचंद्र गुप्त, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : तारकनाथ बाली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 3. पाश्चात्य साहित्य चिंतन : सम्पादक निर्मला जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 4. उदात्त के विषय में : निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – नई प्रवृत्तियाँ : राजनाथ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 6. उत्तरआधुनिक साहित्य विमर्श : सुधीश पचौरी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 7. नयी समीक्षा के प्रतिमान : निर्मला जैन, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली 8. उत्तरआधुनिकता (बहुआयामी संदर्भ) : पांडेय शशिभूषण शीतांशु

अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course) : अष्टम प्रश्नपत्र CCHi VII) - आधुनिक हिंदी काव्य : छायावादोत्तर (तृतीय सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. शिक्षार्थी छायावादोत्तर हिन्दी कविता और उसकी विभिन्न काव्यधाराओं यथा प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता आदि का रचनात्मक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2.शिक्षार्थी दिनकर के महाकाव्य उर्वशी के अध्ययन से भारतीय दर्शन की परम्परा से परिचित होता है तथा आधुनिक संसार में उसकी पुनर्व्याख्या का संधान करता है, जिससे उसे भेदबुद्धि यथा पाप-पुण्य, स्वर्ग-नर्क, ऊँच-नीच आदि से ऊपर उठकर संसार को समझने की चेतना, प्रेरणा व ज्ञान प्राप्त होता है।

CO3.शिक्षार्थी नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताओं के अध्ययन से प्रगतिशील हिन्दी कविता के स्रोत-सिद्धान्तों का ज्ञान सोदाहरण प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, केदारनाथ सिंह, लीलाधर जगूड़ी, अशोक वाजपेयी आदि की कविताओं के अध्ययन से प्रयोगवाद, नयी कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता आदि का रचनात्मक व सैद्धान्तिक ज्ञान सोदाहरण प्राप्त करता

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

है।

CO5.शिक्षार्थी छायावोत्तर काल की हिन्दी कविता की समीक्षा का रचनात्मक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. रामधारी सिंह दिनकर: उर्वशी (व्याख्या के लिए केवल तृतीय सर्ग)। प्रकाशक: लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन': नागार्जुन' की प्रतिनिधि कविताएँ, (उनको प्रणाम, बादल को घिरते देखा है, बहुत दिनों के बाद, मेरी भी आभा है इसमें, प्रतिबद्ध हूँ, वो हमें चेतावनी देने आये थे, सिन्दूर तिलकित भाल, वह दन्तुरित मुस्कान, यह तुम थीं, गुलाबी चूडियाँ, खुरदरे पैर, घिन तो नहीं आती है गीले पाँख की दुनिया गई है छोड़, प्रेत का बयान, अकाल और उसके बाद, आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी, शासन की बन्दूक) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. समय राग। संपादक: डा. मधुबाला नयाल: (व्याख्या हेतु अज्ञेय, गजानन माधव मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, केदारनाथ सिंह और लीलाधर जगूड़ी की कविताएँ), ज्ञानोदय प्रकाशन, नैनीताल

सहायक ग्रंथ - 1. कल्पना का उर्वशी विवाद : गोपेश्वर सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2. समकालीन हिन्दी कविता : ए अरविन्दाक्षन , राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 3. नई कविता का आत्मसंघर्ष : गजानन माधव मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 4. मुक्तिबोध – कविता और जीवन विवेक : चंद्रकांत देवताले, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 5. नागार्जुन और उनकी कविता : नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 6. कविता के नए प्रतिमान : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 7. कई उम्रों की कविता : शिरीष कुमार मौर्य, आधार प्रकाशन 8. हिन्दी कविता (समय से संवाद) : शिरीष कुमार मौर्य, आधार प्रकाशन 9. नागार्जुन की कविता : अजय तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

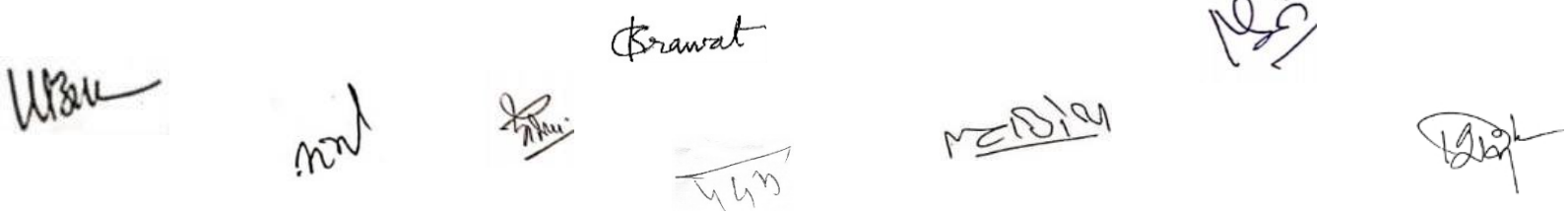

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course) : नवम प्रश्नपत्र CCHi IX - हिंदी कथा एवं नाटक साहित्य (द्वितीय सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. शिक्षार्थी हिन्दी उपन्यास, कहानी तथा नाटक के उद्भव-विकास तथा महत्व का ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2.शिक्षार्थी गोदान के अध्ययन से भारतीय समाज की राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना का अंतरंग साक्षात्कार करते हुए बदल रही जीवन स्थितियों और नए संकटों- समस्याओं को समझने की वैचारिक पद्धति का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3.शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के अध्ययन से हिन्दी कहानी के विकासक्रम, उनके बहुवर्णी सामाजिक कथ्य, प्रमुख कहानी आंदोलनों तथा बदलते शिल्प का परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित नाटक स्कंदगुप्त तथा लहरों के राजहंस के अध्ययन से हिन्दी नाट्यलेखन के विकास, भारतीय व पश्चिमी परम्परा में उसके शिल्पगत रचाव, नाटक के ऐतिहासिक-सामाजिक अभिप्रायों, प्रकारों तथा रंगमंच विधा का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5.शिक्षार्थी कथा साहित्य तथा नाटक की समीक्षा का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. गोदान : प्रेमचंद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. हिंदी कहानी के नौ कदम : संपादक बटरोही, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा ।
3. स्कन्दगुप्त : जयशंकर प्रसाद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद। ।
4. लहरों के राजहंस : मोहन राकेश, राधाकृष्ण प्रकशन नई दिल्ली।
5. एकांकी सुमन – सम्पादक : डॉ. कांबले अशोक, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

सहायक ग्रंथ - **1.** प्रेमचंद और उनका युग : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2. प्रेमचंद और भारतीय समाज : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 3. मेरे साक्षात्कार : हिमांशु जोशी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली 4. कहानी नई कहानी : नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 5. कथा की सैद्धान्तिकी : विनोद शाही, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाण) 6.मोहन राकेश और उनके नाटक : गिरीश रस्तोगी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 7. नाटककार जयशंकर प्रसाद : सम्पादक-सम्पादक- सत्येंद्र कुमार तनेजा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 8. हिन्दी एकांकी : सिद्धनाथ कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course) : दशम प्रश्नपत्र CCHi X - निबंध एवं स्मारक साहित्य (द्वितीय सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. शिक्षार्थी निबंध विधा के स्वरूप, प्रकार और महत्व का सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी हिन्दी में निबंध विधा के उद्भव एवं विकास का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित निबंधों के अध्ययन से हिन्दी के प्रमुख निबंधकारों का परिचय, निबंध की शैलियों तथा विधा का वैचारिक व रचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी स्मारक साहित्य के स्वरूप, उसकी विभिन्न विधाओं तथा महत्व का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी निबंध तथा स्मारक साहित्य की समीक्षा का ज्ञान तथा प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. नीरजा टंडन: हिंदी निबंध मंजूषा (व्याख्या के लिए निर्धारित निबन्ध- सच्ची कविता (बालकृष्ण भट्ट), सच्ची वीरता (सरदार पूर्णसिंह), काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था (रामचन्द्र शुक्ल), देवदारू(हजारीप्रसाद द्विवेदी), अनुभूति,सत्य और यथार्थ(महादेवीवर्मा), प्रेमचन्द के फटे जूते (हरिशंकर परसाई), आदिकाव्य(रामविलासशर्मा), आम्रमंजरी(विद्यानिवासमिश्र), राघव: करुणोरस: (कुबेरनाथराय)।

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

2. महादेवी वर्मा: पथ के साथी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. केशवदत्त रुवाली/जगतसिंह बिष्ट: स्मारक साहित्य संग्रह, तारामंडल प्रकाशन, अलीगढ़।

सहायक ग्रंथ – 1. हिन्दी निबंध साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन : डॉ. बाबूराम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2.साहित्यिक निबंध आधुनिक दृष्टिकोण : बच्चन सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 3. हिन्दी ललित निबंध स्वरूप विवेचन : वेदवती राठी, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली 4. स्मारक साहित्य की विधाएँ : डॉ. निर्मला ढैला एवं डॉ. रेखा ढैला, ग्रंथायन प्रकाशन, अलीगढ़

III Semester

शिक्षार्थी को तृतीय सत्रार्द्ध में तीन अनिवार्य पाठ्यक्रम/प्रश्नपत्र (Core Course), तीन ऐच्छिक पाठ्यक्रम/प्रश्नपत्र (Elective Courses) में से किन्हीं दो तथा दो मुक्त ऐच्छिक (Open Elective Courses) में से किसी एक का चयन करना हैं।

अनिवार्य पाठ्यक्रम/प्रश्नपत्र (Core Course)

अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course) : एकादश प्रश्नपत्र CCHi XI - भाषा विज्ञान (तृतीय सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. Linguistics अर्थात् भाषा-विज्ञान भाषा एवं साहित्य ही नहीं, अभिव्यक्तियों के सन्दर्भ में समाज को समझने की पद्धति के रूप में विकसित होने वाला विषय भी है। अत: इस पाठ्यक्रम से शिक्षार्थी भाषा विज्ञान के अर्थ, स्वरूप, भाषा व्यवस्था,भाषा व्यवहार और उसके महत्व का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

CO2.शिक्षार्थी भाषा प्रयोगशालाओं में उच्चस्तरीय अध्ययन व शोध हेतु आधार योग्यता व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3.शिक्षार्थी भाषा विज्ञान की प्रमुख अध्ययन-शाखाओं यथा स्वन, स्वनिम, रूप, रूपिम, वाक्य, अर्थ आदि का सैद्धान्तिक व तकनीकी ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी भाषा की सामाजिक संरचनाओं तथा भाषा के स्वरूप के आधार पर सामाजिक अभिव्यक्ति के अध्ययन का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO5.शिक्षार्थी साहित्यिक कृतियों के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन का ज्ञान व प्राशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. भाषा और भाषा विज्ञान: भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार, भाषा संरचना और भाषिक-प्रकार्य, साहित्य के अध्ययन में भाषाविज्ञान की उपयोगिता।
2. स्वन प्रक्रिया: स्वनविज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, वाग् अवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन, स्वनिम विज्ञान का स्वरूप,स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषण।
3. रूपप्रक्रिया: रूपप्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ, रूपिम की अवधारणा और भेद: मुक्त- आबद्ध, अन्विताभिधानवाद, वाक्य के भेद, वाक्य विश्लेषण, निकटस्थ-अवयव विश्लेषण, गहन संरचना और बाह्य संरचना।
4. अर्थविज्ञान: अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ-परिवर्तन।

सहायक ग्रंथ – 1. ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2. अद्यतन भाषा विज्ञान : पांडेय शशिभूषण शीतांशु, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 3. भाषा विज्ञान : भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्रकाशन, नई दिल्ली 4.

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

भारतीय भाषा विज्ञान : किशोरीदास वाजपेयी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 5. भाषा विज्ञान की भूमिका : देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 6. भाषा विज्ञान – सैद्धान्तिक चिंतन : रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव

अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course) : द्वादश प्रश्नपत्र CCHi XII - उत्तराखण्ड के हिंदी कवि (तृतीय सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. आधुनिक हिन्दी कविता परम्परा में उत्तराखंड राज्य के कवियों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षार्थी इस परम्परा और उसमें उत्तराखंड के कवियों के महत्व का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।

CO2. गुमानी ने भारतेंदु युग से पूर्व काव्य में खड़ी बोली का प्रयोग किया था। उनकी कविता तत्कालीन अंग्रेजी/कम्पनी राज और सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों के सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं। शिक्षार्थी खड़ी बोली हिन्दी के प्रथम कवि गुमानी के कृतित्व का ऐतिहासिक-रचनात्मक परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3. चन्द्रकुंवर बर्त्वाल छायावाद और प्रगतिवाद के संधिकाल के प्रमुख एवं महत्वपूर्ण कवि हैं। शिक्षार्थी उनके कृतित्व का रचनात्मक परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. लीलाधर जगूड़ी साठोत्तरी हिन्दी कविता के प्रमुख कवि हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बीस वर्ष पश्चात मोहभंग और अवसाद से लड़ रहे आक्रोशित देश और समाज का स्वर उनकी कविता का आरंभिक स्वर है। वे आज भी सक्रिय और रचनारत हैं। शिक्षार्थी उनके कृतित्व का रचनात्मक परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. वीरेन डंगवाल एवं मंगलेश डबराल समकालीन हिन्दी का कविता में अस्सी के दशक के दो सबसे महत्वपूर्ण कवि हैं। वे हिन्दी कविता की प्रगतिशील परम्परा के नए संवाहक है, जिनकी अभिव्यक्ति जनसाधारण की समस्याओं और संघर्षों से जुड़ी है। शिक्षार्थी उनके कृतित्व का रचनात्मक परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

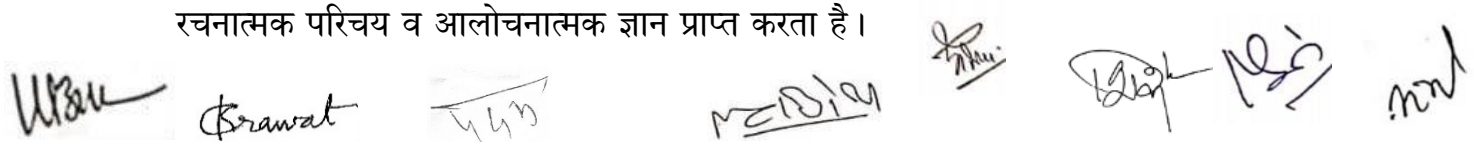

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

CO6.हरीशचन्द्र पांडे समकालीन हिन्दी कविता में नब्बे के दशक के प्रमुख कवि हैं। देश में उदारवाद, भूमंडलीकरण और विभिन्न सामाजिक परिवर्तनों के बीच बदलते हुए जीवन और समाज के प्रसंग उनकी कविता का विषय हैं। शिक्षार्थी उनके कृतित्व का रचनात्मक परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO7.शिक्षार्थी समकालीन हिन्दी कविता की समीक्षा का रचनात्मक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम :

1. गुमानी
2. चंद्रकुँवर बर्त्वाल
3. लीलाधर जगूड़ी
4. मंगलेश डबराल
5. वीरेन डंगवाल
6. हरीशचंद्र पाण्डेय

व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्यपुस्तक: उत्तराखण्ड के हिंदी कवि - संपा0 प्रो0 दिवा भट्ट

सहायक ग्रंथ – 1. लोकरत्न गुमानी : उमा भट्ट, साहित्य अकादमी नई दिल्ली, 2. कहै गुमानी : उमा भट्ट, पहाड़ प्रकाशन, नैनीताल 3. कितने फूल खिले : चंद्रकुंवर बर्त्वाल, पहाड़ प्रकाशन, नैनीताल 4. आता ही कोई नया मोड़ (लीलाधर जगूड़ी : जीवन और कविता) – सम्पादक प्रमोद कौंसवाल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 5. चंद्रकुंवर बर्त्वाल का जीवन दर्शन : डॉ. योगम्बर सिंह बर्त्वाल, समय साक्ष्य प्रकाशन, देहरादून

अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course): त्रयोदश प्रश्नपत्र CCHi XIII - उत्तराखण्ड के हिंदी कथाकार (तृतीय सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. हिन्दी के प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्य में उत्तराखंड राज्य के कथाकारों का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान व स्थान है। शिक्षार्थी इस परम्परा और

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

उसमें उत्तराखंड के कथाकारों के समग्र योगदान और महत्व का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी हिन्दी के उपन्यास साहित्य में उत्तराखंड के उपन्यासकारों के कृतित्व का परिचय तथा आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यास कसप के अध्ययन से हिन्दी साहित्य में विकसित हो रहे नवीन उत्तरआधुनिक कथ्य (स्थानीय-आंचलिक एवं मुक्त-ग्लोबल) एवं शिल्प का परिचय तथा उसका सैद्धान्तिक आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यास गोबर गणेश के अध्ययन से उत्तराखंड के कुमाउनी अंचल के लोक जीवन का परिचय तथा बदलते जीवनमूल्यों व सामाजिक संरचनाओं का आलोचनात्मक प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के अध्ययन से हिन्दी कहानी तथा उसके प्रमुख आंदोलनों अथवा प्रवृत्तियों (मनोवैज्ञानिक कहानी, नयी कहानी, प्रगतिशील कहानी, अकहानी, आंचलिक अकहानी आदि) में उत्तराखंड के कहानीकारों के महत्वपूर्ण रचनात्मक योगदान का परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी कथा साहित्य की समीक्षा का ज्ञान और प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम :

(क) उपन्यासकार:

1. मनोहरश्याम जोशी: कसप (व्याख्या हेतु), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. रमेशचंद्र शाह: गोबर गणेश (व्याख्या हेतु), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

(ख) कहानी-संग्रह:

3. पाँच कहानियाँ (1. दुष्कर्मी- इलाचन्द्र जोशी, 2. रज्जो- रमाप्रसाद घिल्डियाल 'पहाड़ी', 3. हलवाहा- शेखर जोशी, 4. बीच की दरार- गंगाप्रसाद 'विमल', 5. अ-रचित- दिवा भट्ट)- संपा0 डा. जगतसिंह बिष्ट, प्रकाश प्रकाशन, चौघानपाटा, अल्मोड़ा।

सहायक ग्रंथ – 1. पालतू बोहेमियन : प्रभात रंजन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2. बातें -मुलाक़ातें : मनोहरश्याम जोशी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 3. मेरे साक्षात्कार : रमेशचंद्र शाह, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली 4. वाद-संवाद : रमेशचंद्र शाह, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 5. संवेद – मुझे अच्छी तरह से देख (रमेशचंद्र शाह पर केंद्रित अंक), वर्ष 10 अंक 5-6, मई-जून 2018, प्रकाशक - https://notnul.com

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

ऐच्छिक पाठ्यक्रम/प्रश्नपत्र (Elective Courses)

इन तीन ऐच्छिक पाठ्यक्रम/प्रश्नपत्र (Elective Courses) में से किन्हीं दो प्रश्नपत्रों का चयन करना है।

ऐच्छिक पाठ्यक्रम (Elective Courses) : प्रथम प्रश्नपत्र ECHi I – कुमाउनी साहित्य (तृतीय सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. भाषा और साहित्य की नयी उत्तरसंरचनावादी पद्धति में लोक साहित्य तथा स्थानीय भाषाओं व उनके साहित्य के अध्ययन का महत्व बढ़ा है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से शिक्षार्थी कुमाउनी के लोक तथा तत्सम साहित्य का रचनात्मक परिचय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी इस पाठ्यक्रम के खंड (क) में सम्मिलित तीन पुस्तकों के अध्ययन से कुमाऊँ के लोक साहित्य के विविध रूपों का रचनात्मक परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3.शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तक **पछ्याण** के अध्ययन से कुमाउनी कविता का रचनात्मक-शिल्पगत परिचय तथा आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तक **मन्याडर** के अध्ययन से से कुमाउनी कहानी का रचनात्मक-शिल्पगत परिचय तथा आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5.शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तक **मन्खि** के अध्ययन से कुमाउनी निबंध का रचनात्मक-शिल्पगत परिचय तथा आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

खंड (क) कुमाउनी लोक साहित्य

1. सं0 देवसिंह पोखरिया: कुमाउनी लोक गीत - मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद्, भोपाल।
2. डा.प्रयाग जोशी: कुमाउनी लोक गाथाएँ (प्रथम भाग) (व्याख्या हेतु प्रारंभ की 4 लोकगाथाएँ), किशोर एण्ड संस, देहरादून ।

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

3. डा. प्रभा पंत: कुमाउनी लोककथा (व्याख्या हेतु प्रारंभ की 5 लोककथाएँ), अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा।

खंड (ख) कुमाउनी साहित्य

1. पछ्याण – सम्पादक : डा. दिवा भट्ट, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा। (व्याख्या के लिए कविताएँ – जागर, मैती मुलुक, बसंतक पौण, बाँजि कुड़िक पहरू, उलार, पछ्याण और ह्यून)
2. मन्याडर -बहादुर बोरा 'श्रीबंधु', कुमाउनी भाषा-साहित्य प्रचार-प्रसार समिति, अल्मोड़ा। (व्याख्या के लिए कहानियाँ – सराद, नौर्त और मन्याडर)
3. डा. शेरसिंह बिष्ट: मन्खि, अविचल प्रकाशन, बिजनौर (उ0प्र0)। (व्याख्या के लिए निबंध – कुमाउनी साहित्य, मन्खि और हमर पहाड़)

सहायक ग्रंथ – 1. उत्तराखंड -लोक संस्कृति और साहित्य, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली 2. कौ सुआ काथ् कौ (कुमाउनीकि अस्सीसालोकि कथाजात्रा) : सम्पादक मथुरादत्त मठपाल, समय साक्ष्य प्रकाशन, देहरादून 3. कुमाउनी भाषा साहित्य और संस्कृति : डॉ. देव सिंह पोखरिया, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा, 4. कुमाऊं का लोक साहित्य : डॉ. कृष्णानंद जोशी, प्रकाश बुक डिपो, बरेली 5. कुमाउनी भाषा और साहित्य : डॉ. त्रिलोचन पांडे, उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ 6. कुमाउनी – शेर सिंह बिष्ट, साहित्य अकादमी दिल्ली

ऐच्छिक पाठ्यक्रम (Elective Courses) : द्वितीय प्रश्नपत्र ECHi II - विशिष्ट अध्ययन: सूरदास (तृतीय सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल का ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी भारतीय दर्शन में ईश्वर के स्वरूप पर हुई मीमांसा का ज्ञान प्राप्त करता है।

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

CO3. शिक्षार्थी भारतीय अध्यात्म एवं भक्ति में ज्ञानयोग की निर्गुणधारा और प्रेम माधुर्य की सगुणोपासना के विमर्श का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी लोक और प्रकृति के कार्य-व्यवहार का रचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी ईश्वर की लौकिकता और उससे सम्भव हुई संसार और समाज की शुभ्रता का रचनात्मक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी उच्च जीवन मूल्यों तथा नैतिकता का ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

सूरसागर सार - सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा

टिप्पणी: सूरदास का संपूर्ण साहित्य पाठ्यक्रम में है। उक्त पाठ्यपुस्तक से व्याख्या पूछी जाएगी।

सहायक ग्रंथ – भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य : मैनेजर पांडेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2. सूर-साहित्य : हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 3. सूरदास : नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 4. महाकवि सूरदास : नंददुलारे वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 5. सूर-विमर्श : राममूर्ति त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 6. सूरदास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

ऐच्छिक पाठ्यक्रम (Elective Courses) : तृतीय प्रश्नपत्र ECHi III - विशिष्ट अध्ययन: प्रेमचंद (तृतीय सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. प्रेमचंद आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माताओं में अग्रणी हैं। उनके उपन्यासों और कहानियों ने हिन्दी में कथा साहित्य को एक स्थायी एवं सशक्त आधार प्रदान किया है। इस पाठ्यकम के अध्ययन से शिक्षार्थी हिन्दी कथा साहित्य की परम्परा और उसमें प्रेमचंद के योगदान एवं महत्व का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।

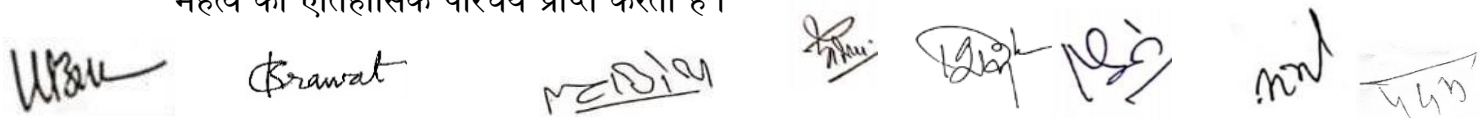

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

CO2.रंगभूमि उपन्यास स्वतंत्रतापूर्व के भारत की बदल रही राजनीतिक-आर्थिक स्थितियों और सामाजिक जीवनमूल्यों के बीच सम्बन्धों की कथा कहता है। अत्यन्त वंचित और विपन्न अंधे भिखारी को नायक बनाने वाले इस उपन्यास से अध्ययन शिक्षार्थी उन आर्थिक दिशाओं और सामाजिक स्थितियों का परिचय और ज्ञान प्राप्त करता है, जिनसे स्वतंत्रतापश्चात देश का सामना होना था।

CO3.शिक्षार्थी प्रेमचंद के उपन्यासों के शिल्प का परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4.शिक्षार्थी कुछ विचार नामक संग्रह में संकलित प्रेमचंद के निबंधों के अध्ययन से उनके राजनीति, आर्थिक और सामाजिक विचारों का परिचय और ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5.प्रेमचंद जन साधारण के जीवन के कहानीकार हैं। शिक्षार्थी प्रेमचंद की प्रतिनिधि कहानियों के अध्ययन से उनकी अंन्तर्वस्तु और शिल्प का परिचय प्राप्त करता है।

CO6.शिक्षार्थी प्रेमचंद के साहित्य पर विशेषज्ञता प्राप्त करता है, जो परवर्ती उच्चस्तरीय शोधादि कार्यों में सहायक होती है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. रंगभूमि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. कुछ विचार, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. प्रतिनिधि कहानियाँ : प्रेमचंद – सम्पादक : भीष्म साहनी , राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

(टिप्पणी: प्रेमचंद का संपूर्ण साहित्य पाठ्यक्रम में है। उक्त पाठ्यपुस्तकों का संदर्भ केवल व्याख्या के लिए है।)

सहायक ग्रंथ – 1. प्रेमचंद और भारतीय समाज : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2. प्रेमचंद के विचार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 3. प्रेमचंद के आयाम : अरविंदाक्षन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 4. प्रेमचंद एक विवेचन: इंद्रनाथ मदान, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 5. प्रेमचंद और उनका युग : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 6. कलम का मजदूर प्रेमचंद : मदन गोपाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 7. प्रेमचंद – कलम का सिपाही : अमृतराय, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद(राजकमल प्रकाशन समूह, नई दिल्ली का अनुषंग)

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

मुक्त ऐच्छिक पाठ्यक्रम/प्रश्नपत्र (Open Elective Courses)

इन दो मुक्त ऐच्छिक पाठ्यक्रम/प्रश्नपत्र (Open Elective Courses) में से किसी एक प्रश्नपत्र का चयन करना है।

मुक्त ऐच्छिक पाठ्यक्रम (Open Elective Courses) : प्रथम प्रश्नपत्र OECHi I – अनुवाद : सिद्धान्त और स्वरूप (तृतीय सत्र)

श्रेयांक 2 (पूर्णांक 50 – 35 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 15 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. अनुवाद दो भाषाओं के बीच कार्य-व्यवहार को सुगम बनाता है। शिक्षार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से अनुवाद प्रक्रिया का समग्र परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी अनुवाद के स्वरूप,विभिन्न क्षेत्रों तथा सीमाओं का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी अनुवाद प्रकिया के विभिन्न चरण और प्रविधि यथा विश्लेषण, अर्थान्तरण, पुनर्गठन, सम्प्रेषण आदि का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी समतुल्यता के सिद्धान्त का परिचय तथा अनुवाद के विभिन्न प्रकारों/क्षेत्रों यथा साहित्यिक, कार्यालयी,मानविकी, संचार माध्यमों, वैज्ञानिक एवं तकनीकी इत्यादि का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी अनुवाद की समस्याओं का विस्तृत परिचय प्राप्त करते हुए अनुवाद का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO6. नयी वैश्विक परिस्थितियों एवं भूमंडलीकृत संसार में संचार, संवाद एवं सम्प्रेषण के सरकारी और गैरसरकारी क्षेत्रों में रोजगार के नए और समृद्ध अवसर उपस्थित हुए हैं। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से शिक्षार्थी समग्रता में इन अवसरों का लाभ उठाने की मूलभूत योग्यता और विशेषज्ञता अर्जित करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम :

1. अनुवाद:अर्थ, सिद्धान्त और स्वरूप।

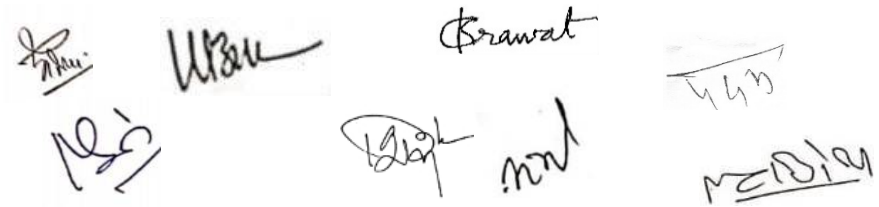

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

2. अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि: विश्लेषण, अर्थान्तरण, पुनर्गठन। अनुवाद-प्रक्रिया के विभिन्न चरण, स्रोत भाषा के पाठ का विश्लेषण एवं उसके अर्थग्रहण की प्रक्रिया, स्रोतभाषा और लक्ष्य भाषा की तुलना तथा अर्थान्तरण की प्रक्रिया।
3. अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धांत।
4. अनुवाद के क्षेत्र एवं प्रकार: कार्यालयी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी, साहित्यिक, मानविकी, संचारमाध्यम, विज्ञापन आदि।
5. अनुवाद की समस्याएँ
6. अनुवाद की सार्थकता, प्रासंगिकता एवं व्यावसायिक परिदृश्य।

सहायक ग्रंथ – 1. अनुवाद क्या है : डॉ. भ् ह राजुरकर, एवं डॉ. राजमल बोरा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2. अनुवाद मीमांसा : निर्मला जैन, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 3. अनुवाद विज्ञान की भूमिका : कृष्ण कुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 4. अनुवाद की समस्याएँ : जी गोपीनाथन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 5. अनुवाद की प्रकिया – तकनीक और समस्याएँ : डॉ. श्रीनारायण समीर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 6. अनुवाद विज्ञान – सिद्धान्त और प्रविधि : भोलानाथ तिवारी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली 7. अनुवाद और पारिभाषिक शब्दावली : केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

मुक्त ऐच्छिक पाठ्यक्रम (Open Elective Courses) : द्वितीय प्रश्नपत्र OECHi II – हिन्दी भाषा (तृतीय सत्र)

श्रेयांक 2 (पूर्णांक 50 – 35 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 15 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. शिक्षार्थी भारत की प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक आर्यभाषाओं का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।
CO2. शिक्षार्थी हिन्दी के भौगोलिक विस्तार, उपभाषाओं और बोलियों के अत्यन्त समृद्ध संसार का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।
CO3. शिक्षार्थी हिन्दी की भाषिक संरचना का विस्तृत रचनात्मक परिचय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।
CO4. शिक्षार्थी हिन्दी भाषा के विविध रूपों, हिन्दी की संवैधानिक स्थिति एवं हिन्दी के वैश्विक महत्व का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

CO5. शिक्षार्थी नए डिजिटल संसार में कम्प्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग की प्रविधियों, तकनीक और भाषा शिक्षण का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी रोजगार अथवा आजीविका के क्षेत्र में हिन्दी भाषा के व्यवहार का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

1. हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ: वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ। मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ: पालि, प्राकृत, शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी। अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण।
2. हिंदी का भौगोलिक विस्तार: हिंदी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियाँ, कुमाउनी और गढ़वाली की विशेषताएँ।
3. हिंदी का भाषिक स्वरूप: हिंदी शब्द रचना: उपसर्ग, प्रत्यय, समास, रूपरचना-लिंग, वचन आदि
4. हिन्दी के विविधरूप -सम्पर्क भाषा,राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रूप में हिन्दी, माध्यम भाषा, संचारभाषा,हिन्दी की संवैधानिक स्थिति तथा वर्तमान वैश्विक सन्दर्भ में हिन्दी
5. हिंदी में कम्प्यूटर सुविधाएँ: आँकड़ा-संसाधन और शब्द-संसाधन, वर्तनी-शोधक, मशीनी अनुवाद, हिंदी भाषा-शिक्षण।

सहायक ग्रंथ – 1. हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास : उदयनारायण तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 2. हिन्दी भाषा का इतिहास : भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 3. हिन्दी भाषा की संरचना : भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 4. हिन्दी भाषा का विकास : गोपाल राय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 5. हिन्दी भाषा का समाजशास्त्र : रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 6. कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग : विजय कुमार मल्होत्रा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

IV Semester

अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course) : चतुर्दश प्रश्नपत्र CCHi XIV – लोक साहित्य

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. किसी भी समाज और राष्ट्र की एक मूल लोक परम्परा होती है, जिससे उस राष्ट्र और समाज के समग्र सामाजिक चरित्र का निर्माण होता है। वैश्विक स्तर पर लोक साहित्य के अध्ययन एवं शोध को महत्वपूर्ण माना गया है तथा विश्वविद्यालयों में इसके पृथक विभाग स्थापित किए गए हैं। लोक साहित्य के अध्ययन से शिक्षार्थी इस मूल लोक परम्परा के अर्थ, स्वरूप और महत्व का परिचय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी लोक संस्कृति और लोक साहित्य के विविध सैद्धान्तिक पक्षों का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी अभिजात साहित्य और लोक साहित्य के अंतर्सम्बन्धों का परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी लोक साहित्य की अध्ययन प्रक्रिया(संकलन तथा पाठ निर्धारण) का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी लोक साहित्य के विविध रूपों का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी लोक साहित्य के शोध का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम :

1. लोक और लोक-वार्ता, लोक-विज्ञान।
2. लोक संस्कृति और साहित्य
3. लोक साहित्य का स्वरूप
4. अभिजात साहित्य और लोक साहित्य का अंतःसंबंध।
5. लोक साहित्य की अध्ययन-प्रक्रिया एवं संकलन की समस्याएँ।
6. लोक साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण: लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, कहावतें, मुहावरे, पहेलियाँ, लोक संगीत।

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

सहायक ग्रंथ – 1. लोक साहित्य की भूमिका : कृष्णदेव उपाध्याय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 2. लोक और शास्त्र – अन्वय और समन्वय : विद्यानिवास मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 3. भारतीय लोक साहित्य : श्याम परमार, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 4. लोक साहित्य का अध्ययन : डॉ. त्रिलोचन पांडेय

अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course) : पंचदश प्रश्नपत्र CCHi XV – मौखिकी (Viva Voice)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. शिक्षार्थी समस्त पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन करता है।

CO2. शिक्षार्थी पुस्तकों द्वारा प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक रूप में अभिव्यक्त करने का प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी विषय का अध्ययन करते हुए आत्मसात किए गए ज्ञान की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी विषय को लेकर अपनी मौलिक दृष्टि की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए साक्षात्कार का अभ्यास व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम : एम.ए. के समस्त पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

टिप्पणी: लिखित परीक्षा की समाप्ति के पश्चात् मौखिक परीक्षा संपन्न होगी।

ऐच्छिक पाठ्यक्रम/प्रश्नपत्र (Elective Courses)

इन तीन ऐच्छिक पाठ्यक्रम/प्रश्नपत्र (Elective Courses) में से किन्हीं दो प्रश्नपत्रों का चयन करना है।

ऐच्छिक पाठ्यक्रम (Elective Courses) : चतुर्थ प्रश्नपत्र ECHi IV – विशिष्ट अध्ययन : कबीरदास (चतुर्थ सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. विश्व की प्राचीन कविता परम्परा में भारत की भक्तिकालीन निर्गुण धारा के कवि कबीर का महत्वपूर्ण स्थान है। विश्व भर में उन पर

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

शोधकार्य हुए हैं। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से शिक्षार्थी कबीर की कविता एवं दर्शन का रचनात्मक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2.शिक्षार्थी कबीर के अध्ययन से भक्ति आंदोलन, संत परम्परा तथा निर्गुण काव्यधारा का ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3.शिक्षार्थी कबीर के अध्ययन से मध्यकालीन भारतीय समाज तथा उसमें उपस्थित जाति-धर्म, अज्ञान, अंधविश्वास आदि के विरुद्ध प्रतिरोध का रचनात्मक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी कविता के दार्शनिक पक्ष का परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी कविता के सामाजिक पक्ष का परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी साहित्य की समग्र आध्यात्मिक एवं सामाजिक समीक्षा का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम:

कबीर ग्रंथावली - संपा0 श्यामसुंदर दास: (व्याख्या हेतु साखी भाग और आंरभिक 100 पद) टिप्पणी: कबीरदास का संपूर्ण साहित्य पाठ्यक्रम में है। उक्त पाठ्यपुस्तक से व्याख्या पूछी जाएगी।

सहायक ग्रंथ – 1. कबीर : हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2. कबीर की खोज : राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 3. कबीर की चिंता – बलदेव वंशी , वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 4. अकथ कहानी प्रेम की : पुरुषोत्तम अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 5. कबीर : सम्पादक – विजयेन्द्र स्नातक, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

ऐच्छिक पाठ्यक्रम (Elective Courses) : पंचम प्रश्नपत्र ECHi V – भारतीय साहित्य (चतुर्थ सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

Course Outcomes

CO1. शिक्षार्थी भारतीयता की मूल भावना, भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति तथा समाजशास्त्र से परिचित होता है।

CO2. शिक्षार्थी अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य के हिन्दी अनुवाद और अध्ययन की समस्याओं से परिचित होता है।

CO3. शिक्षार्थी भारतीय साहित्य के समग्र स्वरूप और महत्व का परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी भारत के दक्षिणी भाषा वर्ग, पूर्वी भाषा वर्ग तथा पश्चिमोत्तर भाषा वर्ग के साहित्य का सामान्य परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तकों के अध्ययन से भारतीय साहित्य का रचनात्मक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी भारतीय साहित्य के अध्ययन से जनसाधारण के स्तर पर राष्ट्र की एकता, सम्पूर्णता, विराटता व अखंडता का साक्षात्कार करता है।

CO7. शिक्षार्थी में राष्ट्रगौरव और राष्ट्रप्रेम की भावना का विकास होता है

पाठ्यपुस्तकें

1. भारतीय साहित्य की भूमिका – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. भारतीय साहित्य : आशा और आस्था – सम्पादक डॉ. आरसु, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

सहायक ग्रंथ – 1. भारतीय साहित्य : मूलचंद गौतम, , राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 2. उर्दू साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : एहतेशाम हुसैन , राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 3. मराठी और उसका साहित्य : प्रभाकर माचवे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 4. भारतीय साहित्य : लक्ष्मीकांत पांडेय एवं प्रमिला अवस्थी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

ऐच्छिक पाठ्यक्रम (Elective Courses) : षष्ठ प्रश्नपत्र ECHi VI – लघुशोध प्रबंध (चतुर्थ सत्र)

श्रेयांक 4 (पूर्णांक 100 – 70 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 30 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

लघु शोधप्रबंध (Dissertation)

CO1. शिक्षार्थी शोध के अर्थ, स्वरूप और महत्व का ज्ञान प्राप्त करता है।

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

CO2. शिक्षार्थी भाषा और साहित्य की शोध प्रविधि का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी शोध प्रक्रिया का व्यावहारिक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी शोध प्रबंध के लेखन का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी शोध के अकादमिक तथा सामाजिक उद्देश्य तथा महत्व का परिचय प्राप्त करता है।

टिप्पणी: जिन संस्थागत विद्यार्थियों ने स्नातकोत्तर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय सत्रार्ध (हिंदी) की परीक्षा में कुल मिलाकर 55 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किए हों, वे पंचदश प्रश्नपत्र के विकल्प में विभागाध्यक्ष द्वारा निर्दिष्ट विभागीय प्राध्यापक के निर्देशन में लघु-शोध प्रबंध प्रस्तुत करते हैं, जिसका मूल्यांकन निर्देशक तथा बाह्य परीक्षक द्वारा किया जाता है।

मुक्त ऐच्छिक पाठ्यक्रम/प्रश्नपत्र (Open Elective Courses)

इन दो मुक्त ऐच्छिक पाठ्यक्रम/प्रश्नपत्र (Open Elective Courses) में से किसी एक प्रश्नपत्र का चयन करना है।

मुक्त ऐच्छिक पाठ्यक्रम (Open Elective Courses) : तृतीय प्रश्नपत्र OECHi III – हिन्दी पत्रकारिता (चतुर्थ सत्र)

श्रेयांक 2 (पूर्णांक 50 – 35 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 15 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

CO1. पत्रकारिता रोज़गार का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जिसका विस्तार बढ़ता जा रहा है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से शिक्षार्थी पत्रकारिता का मूलभूत ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी विश्व तथा हिन्दी पत्रकारिता का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी हिन्दी में पत्रकारिता के मूल तत्वों तथा प्रकारों का तकनीकी ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी समाचार-संकलन तथा सम्पादन कला के समस्त पक्षों का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

CO5. शिक्षार्थी पत्रकारिता से सम्बन्धित लेखन यथा सम्पादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, खोजी समाचार, अनुवर्तन, दृश्य सामग्री आदि का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी इलेक्ट्रानिक मीडिया तथा मुद्रण कला का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO7. शिक्षार्थी भारतीय संविधान, प्रेस क़ानून तथा पत्रकारिता की आचार संहिता का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO8. समग्रता में शिक्षार्थी पत्रकार बनने की प्रेरणा, आधारभूत ज्ञान तथा प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम :

1. पत्रकारिता का स्वरूप और प्रमुख प्रकार।
2. विश्व पत्रकारिता का उदय, भारत में पत्रकारिता का आरंभ।
3. हिंदी पत्रकारिता का उद्भव और विकास।
4. संपादन कला के सामान्य सिद्धांत- शीर्षकीकरण, पृष्ठ-विन्यास। प्रूफ शोधन, ले आउट तथा पृष्ठ-सज्जा। दृश्य सामग्री (कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स) की व्यवस्था और फोटो पत्रकारिता।
5. इलैक्ट्रानिक मीडिया की पत्रकारिता: रेडियो, टी0वी0, वीडियो, केबल, मल्टी मीडिया और इंटरनेट की पत्रकारिता।
6. प्रेस संबंधी प्रमुख कानून तथा आचार संहिता।प्रजातंत्रिक व्यवस्था में चतुर्थ स्तंभ के रूप में पत्रकारिता का दायित्व।

सहायक ग्रंथ – 1. हिन्दी पत्रकारिता हमारी विरासत : प्रो. शंभुनाथ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2. हिन्दी पत्रकारिता का बृहद इतिहास : अर्जुन तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 3. हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंसार : ठाकुरदत्त शर्मा आलोक, , वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 4. भारतीय प्रेस क़ानून और आचार संहिता : शशि प्रकाश राय, आर के पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूर्स, नई दिल्ली

मुक्त ऐच्छिक पाठ्यक्रम (Open Elective Courses) : चतुर्थ प्रश्नपत्र OECHi IV – कुमाउनी भाषा (चतुर्थ सत्र)

श्रेयांक 2 (पूर्णांक 50 – 35 अंक : बाह्य मूल्यांकन / 15 अंक : आंतरिक मूल्यांकन)

Course Outcomes

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

CO1. भाषा और साहित्य की नई उत्तरसंरचनावादी पद्धति में क्षेत्रीय भाषाओं के अध्ययन का महत्व बढ़ा है। कुमाउनी भाषा के अध्ययन से शिक्षार्थी कुमाऊँ और कुमाउनी भाषा का परिचय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO2. शिक्षार्थी कुमाउनी भाषी क्षेत्र की भौगोलिक व सॉंस्कृतिक जानकारी प्राप्त करते हुए कुमाउनी के विविध रूपों का परिचय एवं उनके मध्य निहित अन्तर का ज्ञान प्राप्त करता है।

CO3. शिक्षार्थी कुमाउनी के व्याकरणिक स्वरूप व इसकी विशिष्ट वर्णमाला का रचनात्मक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO4. शिक्षार्थी कुमाउनी की शब्द संरचना व सम्पदा का विस्तृत रचनात्मक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करता है।

CO5. शिक्षार्थी कुमाउनी में हुए अद्यतन कोश कार्य का परिचय व तत्संबंधी तकनीकी ज्ञान प्राप्त करता है।

CO6. शिक्षार्थी कुमाउनी व अन्य आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के मध्य शब्द व संरचनागत आदान-प्रदान का परिचय एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम :

1. कुमाऊँ शब्द की व्युत्पत्ति : विभिन्न मत, कुमाऊँ शब्द की मानक वर्तनी
2. कुमाउनी भाषा का विकास : उद्भव और क्रमिक विकास, कुमाउनी भाषी क्षेत्र, कुमाउनी की विविध बोलियाँ, पूर्वी कुमाउनी और पश्चिमी कुमाउनी में अंतर
3. कुमाउनी का व्याकरण : वर्णमाला, उच्चारण, वर्तनी, लिपि
4. कुमाउनी शब्द : संरचना – कुमाउनी शब्द सम्पदा(शब्द समूह), इतिहास तथा रचना के आधार पर वर्गीकरण, कुमाउनी के कोश विषयक कार्य
5. कुमाउनी और अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं में पारस्परिक आदान-प्रदान : कुमाउनी -गढ़वाली, कुमाउनी-राजस्थानी, कुमाउनी-मराठी, कुमाउनी-बंगाली,कुमाउनी-गुजराती

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent

सहायक ग्रंथ – 1. झिक्कल कामची उडायली (उत्तराखंड की भाषाओं का व्यावहारिक शब्दकोश) : सम्पादक – उमा भट्ट एवं चन्द्रकला रावत, पहाड़ प्रकाशन, नैनीताल 2. कुमाउनी भाषा का अध्ययन : डॉ. भवानीदत्त उप्रेती, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद 3. मध्य हिमालयी भाषा : गोविन्द चातक, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली 4. कुमाउनी भाषा और साहित्य : त्रिलोचन पांडे, उ.प्र.हिन्दी संस्थान, लखनऊ 5. कुमाउनी भाषा और संस्कृति : डॉ. केशवदत्त रूबाली, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा 6. कुमाउनी भाषा साहित्य एवं संस्कृति : डॉ. देव सिंह पोखरिया, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा 7. कुमाउनी – शेरसिंह बिष्ट, भारतीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली 7. कुमाउनी, गुजराती और मराठी समस्रोतीय समानार्थी शब्दकोश : चन्द्रकला रावत, वितरक – कंसल प्रकाशन, नैनीताल

Rawat

प्रो.(चन्द्रकला रावत)

संयोजक-हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग

Scanned Signature of The hon'ble members and experts are used to sign the documents after the meeting with their due permission and consent